डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date 05/5/20

विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र

काव्य, इतिहास और व्याकरण

महाभारत का संक्षिप्त परिचय :-

महाभारत एक ऐतिहासिक ग्रन्थ है। क्योंकि इसमें वर्ण्य विषयों की विविधता है। यह विश्व साहित्य का विशालतम ग्रन्थ है। वर्तमान में इसमें एक लाख श्लोक हैं। महाभारत का सबसे महत्वपूर्ण भाग गीतोपदेश है जिसमें श्रीकृष्ण इस जीवन का पूर्ण दर्शन बोध अर्जुन को करवाते हैं।

महाभारत महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास द्वारा रचित माना जाता है। यह सत्यवती और वैदिक मुनि पराशर के पुत्र थे। कृष्ण वर्ण होने के कारण इनका नाम कृष्ण पड़ा, यमुना के द्वीप में जन्म लेने के कारण द्वैपायन कहलाए तथा वैदिक मन्त्रों को चार संहिताओं में विभाजित करने के कारण व्यास कहलाए।
"विव्यास वेदान् यस्मात् स तस्मात् व्यास इति स्मृतः"
यह कौरवों और पाण्डवों के पितामह भीष्म के समकालीन थे तथा उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षात् द्रष्टा भी थे। तीन वर्षों के अथक परिश्रम करके इन्होंने महाभारत जैसे महान ग्रन्थ की रचना की।—

त्रिभिर्वर्षैः सदोत्थायी कृष्णद्वैपायनो मुनिः।
महाभारतमाख्यानं कृतवानिदमुत्तमम्॥ आदिपर्व 56.32॥

महाभारत के एक लाख श्लोक 18 पर्वों में विभाजित

Scanned with CamScanner

है- आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासी, मौशल, महाप्रस्थानिक तथा स्वर्गारोहण।

आदिपर्व में चन्द्रवंश का विस्तृत इतिहास है तथा कौरवों और पाण्डवों की उत्पत्ति का वर्णन है। सभापर्व में द्यूत क्रीडा का, वनपर्व में पाण्डवों के 12 वर्ष तक वन में रहने का, विराटपर्व में उनका सेवकों के रूप में मत्स्य नरेश विराट के यहाँ गुप्त रूप से रहने का, उद्योग पर्व में कृष्ण का दूत रूप में कौरवों के पास जाने का और कौरवों द्वारा सन्धि प्रस्ताव न माने जाने पर दोनों पक्षों की तरफ से युद्ध की तैयारियों का वर्णन है। भीष्मपर्व नैतिक शिक्षाओं से भरपूर है। गीता भी इसी पर्व में है। द्रोणपर्व में अभिमन्यु वध का, द्रोणाचार्य के कुरुसेना के सेनापति होने का तथा उनके वध का वर्णन है। कर्णपर्व में कर्ण के कुरु सेनापति होने का तथा उसके वध का तथा शल्यपर्व में शल्य के कुरुसेनापति होने का तथा उसके वध का वर्णन है। सौप्तिक पर्व में अश्वत्थामा द्वारा रात में सोते हुए पाण्डुपुत्रों का धोखे से वध करने का वर्णन है। स्त्रीपर्व में कुरु स्त्रियों व गान्धारी के विलाप का वर्णन है। शान्ति व अनुशासन पर्व में भीष्म मृत्यु शय्या पर लेटे हुए युधिष्ठिर

को राजधर्म, आपद्धर्म और मोक्षधर्म के विषय में उपदेश देते हैं। अश्वमेधा पर्व में युधिष्ठिर के राज्याभिषेक का तथा उनके द्वारा किये गये अश्वमेध यज्ञ का, आश्रमवासी पर्व में धृतराष्ट्र तथा गान्धारी के वानप्रस्थ आश्रम में जाने का, मौसल पर्व में मूसल द्वारा यादवों के नाश का तथा व्याध का बाण लगने से कृष्ण की मृत्यु का, महाप्रस्थानिक में पाण्डवों द्वारा अर्जुन के पौत्र परीक्षित को राज्यभार सौंप स्वर्ग की तरफ जाने का और अन्त में स्वर्गारोहण पर्व में पाण्डवों द्वारा द्रौपदी सहित स्वर्ग प्राप्त कर लेने का वर्णन है।

Scanned with CamScanner